ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

मध्य प्रदेश में गैर–सरकारी संगठन की भूमिका

Role of Non-Governmental Organization in Madhya Pradesh

Paper Submission: 13/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

राजश्री शास्त्री
प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
एक्ससेलेन्स कॉलेज,
भोपाल, भारत

शबनम शहादत
शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग
बरकत विश्वविद्यालय,
भोपाल, म.प्र. भारत

सारांश

भारत में गैर–सरकारी संगठनों का इतिहास काफी प्राचीनतम हैं भारत सेवा करने की गोरवपूर्ण परम्परा विरासत के रूप में विद्यवान हैं। सेवा भाव की स्वयं सेवी संस्थाओं की एक लम्बी परम्परा रही हैं। समाज कल्याण का शुभआरंभ गैर–सरकारी संगठनों में देखा जा सकता हैं। गैर–सरकारी संगठनों ने न सिर्फ भारत का ही नही बल्कि पूरे विश्व समुदाय का ध्यान अपनी और (आकृष्ट) किया हैं। यह संगठन जिर्स संदर्भ में कार्य करती हैं। उसी के रूप उनका स्वरूप भी बदलता हैं। जहॉ तक भारत का प्रश्न ही तो तृणमूल स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक गैर–सरकारी संगठनों का जाल सा बिछा हुआ हैं सामाजिक आर्थिक विकास हेतु महत्वपूर्ण कार्य को सम्पादन कर रहा हैं। वर्तमान में सरकार भी गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका की आवश्यकता को महसूस कर रही हैं। और उनकी बढ़ती हुई भूमिका को स्वीकार भी कर रही हैं। वर्तमान में इस क्षेत्र का पर्याप्त विकास हो चुका हैं सामाजिक आर्थिक परिवर्तन के पुनर्निर्माण में रूप चाहे वो शिक्षा का क्षेत्र हो या स्वास्थ्य रोजगार नियोजित विकास का क्षेत्र हो या मानव क्षमता के सभी क्षेत्रों में गैर–सरकारी संगठन अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभ रहे हैं। सामाजिक रूप में पराधीन समुदाय व वर्ग जैसे दलित अनुसूचित जनजाति महिला गरीब दिव्यांग बच्चे आदि के सच्चे मित्र के रूप में अपनी पहचान बनाई हैं। विशेषकर दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका एवं योगदान प्रदान करने का प्रयास कर रहे हैं।

The history of non-governmental organizations in India is quite ancient, the legacy of serving India has survived as a legacy. There is a long tradition of voluntary organizations of service. NGOs can be seen as an auspicious start to social welfare. Non-governmental organizations have attracted the attention of not only India but also the entire world community. This organization works in a JIRS context. Their form also changes. As far as the question of India is concerned, from the Trinamool level to the national level, there is a network of non-governmental organizations performing important work for socio-economic development. At present, governments are also realizing the need for non-governmental organizations. And is also acknowledging her growing role. At present, this sector has developed enough in the form of reconstruction of socioeconomic change, whether it is education or health employment, planned development or non-governmental organizations are playing a remarkable role in all areas of human potential. Socially subservient communities and classes like Dalit, Scheduled Tribe women, poor disabled children etc. have made their mark as true friends. Particularly Divyang are trying to provide active role and contribution in the field of education of children.

मुख्य शब्द : चलन, दिब्यांगता, श्रावण बाधित, बौद्विक दिव्यांगता, दृष्टि बाधित, कम ऊंचा सुनना, प्रमष्तिक घात, मांसपेशी दुर्विकार, दुर्विकार, उल्प दृष्टि, बहु दिव्यांतगता, सक्कल कोशिका रोग।

Movement, Dysphagia, Hearing Impaired, Intellectual Disabilities, Impaired Vision, Low Hearing, Cerebral Palsy, Muscular Dystrophy, Malignancy, Ulcerative Vision, Multiple Disabilities, Succulent Cell Disease.

प्रस्तावना

गैर–सरकारी संगठन की भूमिका

गैर–सरकारी संगठनों कीभूमिका दिव्यांगता ेके क्षेत्र में देखा जा सकता हैं। जिसे हम पिछली शताब्दियों से लेकर वर्तमान समय तक जीवित रखा गया हैं। भारत मे जनहित के लिए गैर–सरकारी संगठनों की कार्य करने की

गौरवपूर्ण परंपरा विद्यमान रही हैं प्रचीन समय में इन का कोई निश्चित अर्थ था ना ही निश्चित उद्देश्द और ना ही कोई निश्चित कार्य एंव गतिविधियॉ सिर्फ गरीवो को धन देना था और मौक्षप्राप्त स्वंग की कर्मना था वर्तमान समय में अब इन कानिश्चित उद्देश्य एंव कार्य गतिविधय है। गैर सरकारी संगटन दिव्यागोजनो की शिाक्षा एंव पुनवर्स करना है।

नागरिक समाज के एक मुख्य संघटक के रूप में गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका में भी उल्लेखनीय बदलाव आया हैं। उनका स्वरूप अधिक रचनात्मक और विकासात्मक हुआ हैं। यही कारण है। कि यह राजनीति विज्ञान के अध्येताओं के लिए अध्ययन और विश्लेषण का क्षेत्र बना गया हैं। जहॉ तक भारत का प्रश्न है। तो तृणमूल स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक गैर–सरकारी संगठनों का जाल–सा बिछा हुआ हैं। जो सामाजिक आर्थिक विकास हेतु प्रतिबद्ध दिखते हैं। एवं महत्वपूर्ण कार्यो का भी सम्पादन कर रहे हैं। सद्शासन की प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में ये सरकार के विकास संबंधी प्रायोजित कार्यक्रमों का भी संपादन कर रहे हैं। उसी के अनुरूप उसका स्वरूप बदलता रहता हैं। साथ ही कुछ संगठन ऐसे भी होते हैं। जो या तो समुदाय की जरूरत के अनुसार अपनी गतिविधियों मे बदलाव लाते है या फिर धनराशि प्राप्त करने के लिए उसमें फेरबदल कर लेते हैं।

गैर–सरकारी संगठन कार्यकर्ताओं द्वारा एक साथ करने हेतु संगठित किया गया एक समूह होता हैं जिसके अंतर्गत जनसमूह स्वैच्छिक संगठन, स्वैच्छिक एजेन्सी, समाज कल्याण समूह और दिव्यांग शिक्षा एवं महिला आंदोलन समूह आदि सम्मिलित हैं। ये सभी संगठन समुचित अधिनियम के तहत पंजीकृत होते हैं। एवं इनका प्रमुख उददेश्य समाज सेवा करना होता हैं। न कि लाभ प्राप्त करना अतः ऐसे बडे एवं छोटे संगठनों जो कि देश की प्रशासनिक व्यवस्था के पद श्रेणी के अंतर्गत नही आते किन्तु जनता के विकास हेतु कार्यरत रहते हैं। इन्हे गैर सरकारी संगठन कहा जाता हैं ये समूह या संगठन स्थानीय स्तर राष्ट्रीय स्तर व अंतर्राष्ट्रीय स्तर सभी स्तरों के होते हैं। राज्य सरकार भी सामाजिक – आर्थिक विकास में गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका की आवश्यकता को महसूस कर रही हैं। और उनकी बढ़ती हुई भूमिका को स्वीकार भी कर रही हैं। वर्तमान में देश में इस क्षेत्र में गैर–सरकारी संगठनों का पर्याप्त विकास हो चुका हैं। और सामाजिक आर्थिक परिवर्तन एवं पुनः निर्माण के एक सशक्त साधन के रूप मे यह क्षेत्र उभर रहा हैं। चाहे वो शिक्षा का क्षेत्र हो या स्वास्थ्य का रोजगार का क्षेत्र हो या जनजागरण का नियोजन विकास का क्षेत्र हो या मानव–क्षमता के संवर्द्धन का। सभी क्षेत्रों में गैर–सरकारी संगठन हर क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निमाई हैं। एवं सामाजिक रूप से पराधीन समुदाय वर्ग (जैसे दलित अनुसूचित जनजाति वर्गीय बच्चे आदि) के सच्चे मित्र के रूप में अपनी पहचान बनायी हैं। विशेषकर दिव्यांग बच्चों की शिक्षा की दिशा में भी गैर–सरकारी संगठन अपनी सक्रिय भूमिका निभा ने का प्रयास कर रहा हैं। महिलाओं के शोषण एवं दिव्यांग बच्चों के शोषण तथा उत्पीडन के विरूद्ध तथा उनके मानवाधिकार के हनन के विरूद्ध इस क्षेत्र ने अपनी कमर कस ली हैं। इतना ही नही नारियों की मानव–क्षमता को बढ़ाये जाने उन्हें समाज में उचित दर्जा दिए जाने तथा व्यापक जन जागरण एवं शिक्षा विस्तार के माध्यम से शिक्षा एवं नारी मानवाधिकार के संरक्षण एवं संवर्द्धन का दायित्व भी आज इस क्षेत्र ने अपने कंधो पर लिया हैं। और पूरे देश मे इस उददेश्य हेतु सक्रिय भी हैं। फलतः मध्यप्रदेश एवं अपेक्षाकृत दूसरा बड़ा राज्य है। इसके जिले विशेषकर भोपाल भी इसके प्रभाव से अछूता नही रहा हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

1. शैक्षणिक सुविधाए
2. योगा कक्षा
3. व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए कार्यशाला
4. परिवहन सुविधाऐं
5. माता – पिता का शिविर

गैर–सरकारी संगठनों का इतिहास

वर्तमान में गैर–सरकारी संगठनों राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनो ही स्तरों महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। गैर–सरकारी संगठनों के इतिहास को हम दो स्तरों में बॉट सकते हैं विश्व के संदर्भ में एवं भारत के संदर्भ में।

विश्व के संदर्भ में

अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रास और रेड क्रिसेन्ट आंदोलन मानवता वादी गैर–सरकारी संगठनों का विश्व का सबसे बड़ा समूह हैं स्वैच्छिक संगठनों का अस्तित्व इतिहास में दिखाई देता हैं। परंतु आज के गैर–सरकारी संगठन विशेषकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पिछली दो शताब्दियों में विकसित हुए हैं दि रेडक्रास की स्थापना 1863 में हुई। गैर–सरकारी संगठन संबोधन का प्रयोग सन् 1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के साथ प्रारंभ हुआ। संयुक्त राष्ट्र घोषणा पत्र के अध्याय 10 के अनुच्छेद 71 की धाराओं के अनुसार इसकी स्थापना उन संगठनों के सलाहकार के रूप में की गई जो सरकार के नही थे 20वीं शताब्दी के दौरान वैश्वीकरण ने गैर–सरकारी संगठनों के महत्व में वृद्धि की हैं[13]।

भारत के संदर्भ में

भारत में गैर–सरकारी संगठनों का इतिहास काफी प्राचीनहैं भारत में गैर–सरकारी भाव की विरासत और स्वयं सेवी संस्थाओं की एक लम्बी परंपरा रही हैं। सामाजिक हित के लिये किये जाने वाले कार्यो से संबंधित स्वयं सेवी संगठनों का भारतीय इतिहास अत्याधिक स्वर्णिम हैं। क्योंकि सेवा राहत शिक्षा कार्य उपकार आदि गतिविधियों के लिये भारत के सांस्कृतिक मूल्य एवं नीतियॉ भी काफी हद तक जिम्मेदार हैं। हिन्दू धर्म में दान को व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों स्तरों पर सर्वश्रेष्ठ माना गया हैं। दान को मोक्ष प्राप्ति हेतु आवश्यक तत्व माना जाता था। राजा परोपकारी शासक बनने का प्रयत्न करता था। ताकि उसकी कीर्ति उसके राज्य की सीमाओं के बाहर भी फेले। ऐसा माना जाता था कि इससे स्वर्ग में उनका स्थान निश्चित होगा। धनवानों द्वारा दिये गए दान के पीछे भी सामान्यताः यही अवधारणा स्पष्ट होती थी। जब उनके जीवन का अंत होगा तब यह दान उनके किये गये बुरे कर्म गलतियों/पापों से मुक्ति दिलाकर मोक्ष प्राप्ति में सहायक हो प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में

स्वैच्छिकता ने विभिन्न रूपों में उपस्थिति दर्ज की प्राकृतिक आपदाओं जैसे – सूखा बाढ़ भूकंप आदि के समय लोग प्रभावितों की सहायता हेतु स्वेच्छा से आगे आए। प्रथम चरण के गैर–सरकारी संगठनों की स्थिति विश्व के अधिकांश भागों में समान थी। इस चरण के गैर–सरकारी संगठन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रत्यक्ष सेवा का कार्य करते थे।

1. गैर–सरकारी एक ऐसा संगठन है जो जनता का एक ऐसा समूह भी है। वो स्वतंत्र रूप से काम करता है एवं इस पर किसी भी प्रकार का कोई बाहरी नियंत्रण नहीं होता है। प्रत्येक संगठनों के अपने कुछ उद्देश्य एवं लक्ष्य होते है। जिनके आधार पर वे किसी समुदाय इलाके या परिस्थिति विशेष में उपयुक्त बदलाव लाने के लिए अपने निर्दिष्ट कार्यों को पूरा करते है।

गैर सरकारी संगठनों के प्रकार

गैर–सरकारी संगठनों के प्रकारों को उनके प्रमुख सरोकारों के आधार पर भी पहचाना जाता है। इन संगठनों को उन के उद्देश्य एवं गतिविधियों एवं राजनीतिक झुकाव के आधार पर पॉच रूपों में परिभाषित किया जाता है। ऐसे समूह जो कि रिलीफ और चैरिटी का भी कार्य करते है और दूसरे ऐसे भी समूह है जो कि विकासात्मक योजना एवं कार्यक्रमों के संपादन के कार्य में संलग्न है। तृतीय ऐसे सरकारेन्तर समूह जिनके कार्य किसी मानवीय सरोकार के लिए लोग का संगठन एवं लाभबंदी करण हो। चतुर्थ ऐसे मसूह जिनका उद्देश्य राजनीतिक व्यवस्था पर दबाव डालना हो एवं पंचम ऐसा समूह जो लोगों में राजनीतिक शिक्षा के प्रसार का कार्य करते है।

गैर–सरकारी संगठन . शब्दवाली को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप से अपनाया गया है। संयुक्त राष्ट्र की नाम शब्दावली में गैर–सरकारी संगठन को एक ऐसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में परिभाषित किया गया है। जिसकी स्थापना अन्तर सरकारी करार के तहत न की गयी हो। इसमें वे संगठन भी शामिल है जिनमें सरकारी प्राधिकारों की तरफ से नामित किए गए पदाधिकारी सदस्यों को भी शामिल किया जाता है। व शर्तो कि वे सदस्य संगठन की और से किसी तरह का अगर कोई निष्पक्ष विचार प्रकट किया जाता है तो उस बारे में कोई दखल अन्दाजी न करे। गैर–सरकारी संगठन मार्केट में बनाई गई संस्थाओं एवं राज्य के दायरे से बाहर होते है। ये समाज द्वारा आंशिक रूप से स्वैच्छिक रूप से दिये गए धन प्राप्त करते है। भारत में गैर–सरकारी संगठन . आंशिक रूप से स्वैच्छिक रूप से दिये गए धन प्राप्त करते है। भारत में गैर–सरकारी संगठन शब्दावली का प्रयोग ऐसे संगठनों के लिए किया जाता है जो गैर–सरकारी प्रायः सरकारी या अर्द्ध सरकारी स्वयंसेवी या गैर–स्वयंसेवी पार्टिशन या नान–पार्टिसन औपचारिक या अनौपचारिक लाभ अर्जित न करने वाली इकायां होती है। जिनका एक वैध स्वरूप होता है। और जो एक विशेष अधिनियम जैसे कम्पनीज एवट सोसायइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट आदि के तहत पंजीकृत हो विभिन्न संस्थाओं से धन प्राप्त करने के निर्मित सुपात्र बनने के लिए इनका एक वैध स्वरूप होना अथवा एक विधिवतः बनाई गई इकाई के रूप में होना जरूरी है।[22]

इस प्रकार स्पष्ट है कि गैर–सरकारी संगठन नागरिक समाज का एक अभिन्न भाग है ऐसे सभी अलाभकारी मानवीय एवं स्वयंसेवी समूह जो समाज में किसी न किसी हित के लिए संघर्षरत एवं प्रयत्नशील है। गैर–सरकारी संगठन की श्रेणी शामिल होते है। ऐसे समूह व संगठन अपने सरोकारों के लिए सरकार से संवाद भी स्थापित करते है। भारत में पिछले कुछ सालो में गैर–सरकारी संगठन की संख्या में काफी विस्तार हुआ है एवं तकरीवन देश के सभी राज्यों में बडी संख्या में इनकी मौजूदगी व क्रियाशीलता दिखती है। ऐसी संवैधानिक व्यवस्थाए अधिनियम एवं अन्य कानून जो बाल कल्याण महिला कल्याण मानवाधिकार बाल मजदूरी उत्तराधिकार और दत्तक व्यवस्था किशोरों के लिए न्याय बाल विवाह निरोध समान पारिश्रमिक दहेज निषेध, स्त्रीप्रथा, उन्मूलन, घरेलू हिंसा व्याभिचार निषेध वृद्ध लोग मानसिक रोगी उपभोक्ता अधिकार मानव अंगो के व्यापार नशीले पदार्थ वन्य एवं पर्यावरण पशु– अधिकार अनुसूचित जाति एवं जनजाति कैदी निर्धनों की सहायता सार्वजनिक संपत्ति और सूचना के अधिकार आदि से जुड़े हुए हैं। गैर–सरकारी संगठनो के कर्म को औचित्य प्रदान करते हैं। तथा उनकी कार्यप्रणाली में उन्हें सहायता करते हैं।[23]

वैसे तो भारतीय प्रांतो में कई प्रकार के गैर–सरकारी संगठन सक्रिया भूमिका निशा रहे हैं। एवं सरकार द्वारा इन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान की जा रही हैं। किन्तु ऐसे बहुत से गैर–सरकारी संगठन है जो आर्थिक लाभ कमाने के लिए स्थापित कर लिए जाते हैं। जिनका काम लोगों का कल्याण कम और अपना कल्याण ज्यादा हैं। फिर भी अभी भी कई ऐसे एन.जी.ओ. है, जो सही से अर्थो में सराहनीय कार्य कर रहे है। इनकी चर्चा आगे विस्तार से की गई हैं। भोपाल म.प्र के गैर सरकारी संगठन की उल्लेखनीय हैं कि अन्य राज्यों की तरह भोपाल जिले में भी दिव्यांग बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में कई गैर–सरकारी संगठनों का उद्भव एवं विकास हुआ हैं। आगे हम इस मध्यप्रदेश के भोपाल जिले में गैर–सरकारी संगठनो जो दिव्यांग बच्चों की शिक्षा में विशेष भूमिका एवं योगदान की चर्चा करेगें।

आरूषी संस्था भोपाल में स्थित एक गैर लाभकारी संगठन है जो दिव्याग लोगों के साथ काम करती हैं

दिग्दर्शिका इंस्टीट्यूट ऑफ रिहैबिलिटेशन यह एक शोध संस्था हैं जो कि दिव्यांग लोगों एवं बच्चों की देखभाल करते हैं।

शुभम विकलांग एवं समाज सेवा समिति

ज्योति मानसिक रूप से मंद और मूक बाधिर बच्चों का एक संस्था हैं।

शैक्षणिक सुविधाऐं

कम्प्यूटर शिक्षा में नवीनतम विकास के लिए सामने आ रहे हैं कम्प्यूटर जागरूकता के लिए विशेष सुविधाऐं प्रदान की जा रही हैं कम्प्यूटर कक्षा में हमारे छात्र कम्प्यूटर का बुनियादी ज्ञान जैसे रंग भरना टाइप करना खेल खेलना आदि सीखते हैं। इन कक्षाओं का

उपयोग हमारे छात्रों को प्रेरणा और सामाजिक विकास में मदद करने के लिए किया जा सकता हैं।

योगा कक्षा

योग व्यायाम शारीरिक विकास के साथ – साथ मानसिक के लिए भी प्रभावी हैं कक्षाओं में विभिन्न आसन और व्यायाम उनकी शारीरिक समस्याओं और मानसिक एकाग्रता को ठीक करने के लिए दिए जाते हैं।

व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए कार्यशाला

ग्रींटिग कार्ड पेटिंग, टॉय मेकिंग आदि बनाने के लिए विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षण दिया जाता हैं लूम में शॉल, बेड शीट ताकिए टेबल क्लाथ कालीन आदि बनाते है यह प्रशिक्षण उनके रोजगार और पुनर्वास के लिए उपयोगी है।

माता – पिता का शिविर

इन बच्चों के प्रशिक्षण के लिए माता पिता कैम्पपैरेन्ट्स को विशेष प्रशिक्षण और सलाह भी दी जाती हैं मानसिक मंदता पर विशेष बातचीत और समूह चर्चा होती हैं विशेषज्ञों से सलाह ली जाती हैं।

परिवहन सुविधाऐं

स्कूल बस छात्रों को स्कूल लाती और उन्हें उनके घर छोड़ देती हैं। घर वापस अच्छी तरह से सुरक्षित करती हैं।

चिकित्सा

हम अपने स्कूल के छात्रो की फिजियो थैरेपी स्पीच थैरेपी म्यूजिक थैरेपी और भी बहुत कुछ प्रदान करते हैं।

कक्षाओं

समाज के वंचित वर्गो से आने वाले दिव्यांग बच्चों के बीच स्कूल की तत्परता कौशल इन कक्षाओं में आयोजित की जाती हैं स्कूल जाने वाले बच्चे अपनी विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं के लिए इसका उपयोग करते हैं इन कक्षाओं में शिक्षकों सामुदायिक कार्यकर्ताओं गैर सरकारी संगठनों के लिए संवेदनशीलता जागरूकता और क्षमता निर्माण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

पुनर्वास सुविधाऐं

अच्छी तरह से सुसज्जित फिजियोथैरेपी स्पीच थैरेपी व्यावसायिक चिकित्सा और एयू के साथ एक पुनर्वास केन्द्र।

विकलांग व्यक्तियों (पीडब्ल्यूडी) के प्रति जागरूकता निर्माण शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मविश्वास बठाना पीडब्ल्यूडी के विभिन्न विभिन्न विकासात्मक योजनाओं से जोड़ना। अपनी चिंताओं को व्यक्त करने और उनके अधिकारी की वकालत करने के लिए मंच बनाना हैं।

अध्ययन विधि

द्वितीयक तथ्य एकत्रीकरण

द्वितीयक तथ्य सरकारी व गैर सरकारी विभिन्न प्रकाशनों से प्राप्त होते हैं। सामाजिक समस्या को समझने में द्वितीयक तत्व बहुत सहायक होते हैं। यह सामाजिक घटना या समस्या का तुलनात्मक अध्ययन करने में उपयोगी रहते हैं। द्वितीय तत्व को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया जाता है।

1. सरकारी प्रकाशन
2. पत्र–पत्रिका
3. अनुसंधान संस्थाओं के प्रकाशन
4. इंटरनेट
5. ग्रंथालय

दिव्यांग छात्र/छात्राओं की आयु स्थिति

क्रमांक	आयु समूह वर्षों में	संख्या	प्रतिष्त
1	0–5	05	2.50%
2	5–10	38	19.0%
3	10–15	60	30.0%
4	15–17	62	31.0%
5	17 से अधिक	35	17.5%
योग		200	100.0%

तालिका क्रमांक 7.1 उपयोग तालिका संख्या में उत्तरदाता छात्र छात्रों की आयु संबंधी विवरण दिया गया 200 उत्तरदाताओं में 0– 5 आयु समूह के छात्र छात्रों का सखा 05 जिनका प्रतिशत 2.5% रहा वहीं 5–10 आयु समूह के छात्र छात्रों की संख्या 38 है जिसका प्रतिशत 19.0% रहा व 10–15 आयु समूह के छात्र छात्रों की संख्या 60 जिसका प्रतिशत 30 है वहीं 15–17 आयु समूह के छात्र छात्रों की संख्या 62 है जिनका प्रतिशत 31 निकला है वहीं 17 से अधिक आयु समूह के छात्र छात्रों की संख्या 35 है जिनका प्रतिशत 17.5% है।

अतः तालिका के अवलोकन के अनुसार सर्वाधिक उत्तरदाता 15–17 आयु समूह छात्र छात्रों की संख्या 62 का प्रतिशत 31 है और सबसे कम उत्तरदाता 0–5 आयु समूह छात्र छात्रों की संख्य जिनका प्रतिशत 2.5% रहा है।

उत्तरदाता में से जो संपूर्ण शरीर से दिव्यांग है वह बोल नहीं पाते उनके स्थान पर उनके माता–पिता से प्रश्न कर उत्तर लिया गया जिनने बताया।

दिव्यांगों को गैर सरकारी संस्था पुनर्वास सुविधा उपलब्ध की स्थिति?

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिषत
1	नहीं करती	35	17.5%
2	कुछ सीमा तक	165	82.5%
योग		200	100.0%

उपरोक्त तालिका क्रमांक 7.11 के अनुसार दिव्यांग उत्तरदाता के माता–पिता अपने बच्चे दिव्यांगों को गैर सरकारी संस्था पुनर्वास सुविधा उपलब्ध करती है के संबंध का विवरण दिया गया है उत्तरदाता 200 नहीं करती की संख्या 35 जिसका प्रतिशत 17.5% रहा है। वहीं कुछ सीमा तक करती है की संख्या 165 है जिसका प्रतिशत 82.5% रहा है।

अतः उपरोक्त तालिका के अवलोकन के अनुसार सर्वाधिक उत्तरदाताओं की कुछ सीमा तक की संख्या 169 है जिसका प्रतिशत 82.5% रहा है। वही सबसे कम कि नहीं की संख्या 35 है जिसका प्रतिशत 17.5% रहा है।

संस्था की तरफ से आपके बच्चे की दिव्यांगता को कम करने के लिए विधि की स्थिति?

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिषत
1	पढ़ाई के द्वारा	55	27.5%

2	योगा के द्वारा	47	23.5%
3	खेल के द्वारा	09	4.5%
4	अन्य विधि	89	44.8%
योग		200	100.0%

उपरोक्त तालिका क्रमांक 7.12 के अनुसार दिव्यांग उत्तरदाता के माता–पिता संख्या की तरफ से आपके बच्चे की दिव्यांगना को कम करने के लिए किस विधि का प्रयोग करते है? के संबंध का विवरण दिया गया है उत्तरदाता 200 पढ़ाई के द्वारा भी संख्या 55 है जिसका प्रतिशत 27.5 रहा है। वहीं योगा के द्वारा की संख्या 47 से जिसका प्रतिशत 23.5 रहा है। खेल के द्वारा संख्या वही जिसका प्रतिशत 4.5 रहा है वहीं अन्य विधि के द्वारा की संख्या 89 है जिसका प्रतिशत 44.8 रहा है।

आपकी संस्था में आत्मनिर्भर बनाने के लिए कौन सा प्रशिक्षण दिये जाने की स्थिति।

क्रमांक	विवरण	संख्या	प्रतिषत
1	नहीं	42	21.0%
2	लघु उद्योग	118	59.0%
3	हाँ	48	24.0%
योग		200	100.0%

उपरोक्त तालिका क्रमांक 7.13 के अनुसार दिव्यांग उत्तरदाता छात्र छात्रों आप की संख्या में आत्मनिर्भर बनाने के लिए कौन सी प्रशिक्षण दिया जाता है? के संबंध का विवरण दिया गया है। उत्तरदाता 200 कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता की संख्या 42 है जिसका प्रतिशत 21.0 रहा है। वही लघु उद्योग का प्रशिक्षण दिया जाता है की संख्या 118 है का प्रतिशत 59.0 है व अन्य की संख्या 48 से जिस का प्रतिशत 24% रहा है।

उपयोग तालिका के अवलोकन के अनुसार सर्वाधिक उत्तरदाता की लघु उद्योग देने की प्रशिक्षण की संख्या 118 है उसका प्रतिशत 59.0 रहा है। वही सबसे कम कि प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है की संख्या 42 है जिसका प्रतिशत 21.0 रहा है।

निष्कर्ष

गैर–सरकारी संगठनों विभिन्न योजनाएं संचालित कर रही हैं। विगत कुछ दशक में दिव्याग पुनर्वास के क्षेत्र में युद्व स्तर पर कार्य किये गये हैं जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय राजकीय एवं स्थनीय स्तर पर कार्य कर रहे सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके लिए गठित तमाम समितियां तथा संचालित राष्ट्रीय संस्थानों ने इनके शिक्षण–प्रशिक्षण तकनीकी में विकास कर इन्हें आधुनिकतम सेवाइं प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिले एवं स्थानीय स्तर पर पुनर्वास सेवाएं उपलब्ध कराने की दिशा में केन्द्र एवं प्रदेश सरकार ने आवश्यक कदम उठाये हैं, परन्तु सेवाओं एवं संसाधनों की पूर्ति तथा जागरूकता की दिशा में अभी बहुत कुछ करना शेष है। लिसके उपरान्त ही सम्पूर्ण पुनर्वास की संज्ञा दिया जाना सम्भव होगा।

परिकल्पना एक ऐसी संस्था के रूप में भी जाती है। गैर–सरकारी संगठनों की जिसकी संरचना कुछ व्यक्तियों से मिलकर या व्यक्तियों की एक समिति से मिलकर की हो। इसका एक निश्चित नाम और उद्देश्य होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वी.एन. टेकुमल्ला 1976 दि फिरका डेवलपमेन्ट स्कीम ऑफ मद्रास प्राविन्स एस.पी. मिततल एण्ड एम. रफीक खान हिस्ट्री ऑफ रूरल डेवलपमेन्ट इन मॉडर्न इण्डिया भाग 4 गांधी इन्स्टीटयूट ऑफ स्टडीज वाराणस*
2. *आर. सुर्यमूर्ति एव के डी गंगराडे 2006 भारत मे गैर सरकारी संगठन रावत पब्लिकेशन, जयपुर,*
3. *देवेन्द्र ठाकुर 1997 रोल ऑफ वॉलन्टरी आर्गेनाइजेशन इन ट्रायवल डेवलपमेंट दीप पब्लिकेशन नई दिल्ली*
4. *सुभाष सेतिया 2003 राष्ट्रीय विकास में स्वयंसेवी क्षेत्र की भूमिका, सवालिया बिहारी वर्मा पूरन चन्दा 2005 एन. जी. ओ. इन इण्डिया ऑकाक्षा पण्लिशिंग नई दिल्ली*